॥ जगत्गुरु भारत ॥

विश्व में सबसे पहले मानव ने जहाँ आँखे खोली.... दिव्य संस्कृति के आधार पर वैभव शाली सभ्यता का जहाँ विकास हुआ.... सारे विश्व को खुले हाथों से ज्ञान - विज्ञान का संचित - संग्रहीत खजाना लुटाया और बदले में जगद्गुरु का पद पाया... हमारे भारत ने !

सम्पूर्ण सृष्टि में एक ही ईश्वरत्व का दर्शन करते हुवे

"वसुधैव कुटुम्बकम्"

॥ विज्ञानवान भारत ॥
• वैभवपूर्ण वास्तु शिल्प
• दिल्ली स्थित सदियों प्राचीन लौह स्तंभ
• विश्व की सर्वोत्कृष्ट कालगणना-खगोल
• कोहिनूर जैसा अनमोल हीरा
• चरक व सुश्रुत की श्रेष्ठ चिकित्सा..
• अजंता के चमकदार रंग
• दिल्ली की वेधशाला (तथाकथित कुतुबमीनार)
• विश्व के श्रेष्ठतम काव्य.... समाज, अर्थ, राज्य, नीति, कला, शिक्षा आदि से युक्त अनेकों दुर्लभ ग्रंथ
सदियों की लूटपाट और विध्वंस के बाद भी हमारी कालजयी संस्कृति की गौरवगाथा कह रहे हैं ये अप्रतिम प्रमाण .

"व्यक्ति के लिये समाज और
समाज के लिये व्यक्ति"
उक्त विचारों पर आधारित थी हमारी
वर्णाश्रम व्यवस्था। ५० वर्ष की
आयु के बाद निजी दायित्वों से मुक्त
होकर वानप्रस्थी के रूप में अपने
अनुभवों का लाभ अनुसंधान आदि
के रूप में समाज को देता था।

- उक्त कारण से शिक्षा प्राप्त युवाओं को ना तो भटकना पड़ता था, और ना ही विदेशों की ओर भागना पड़ता था। अशिक्षितों के लिये भी पारंपरिक रोजगार उपलब्ध थे।

विज्ञान के बड़े बड़े चमत्कार हमारी इसी विशिष्ट जीवन शैली की सुखद देन हैं।

। भारत ने भौतिक विकास किया प्राकृतिक समन्वय के साथ।

सारे संसार को भारत ने सदैव दिया ही दिया....किन्तु आज.....

ॐ भवति भिक्षां देही!

विश्व का सबसे बड़ा भिखारी देश है। छोटे छोटे देशों से भी कर्ज लेकर एक शर्मनाक रेकार्ड बनाया है।

विदेशी दबाव

कर्ज की मजबूरी में
भारत को तीन बार।
अपनी मुद्रा का बड़े पैमाने
पर अवमूल्यन करना पड़ा.

फलतः देश की कृषि, खनिज
संपदा, तकनीकि, श्रम, प्रज्ञा
हरेक वस्तु का अवमूल्यन
स्वतः हो गया।

"भारत एक धनी देश है जिसमें गरीब लोग निवास करते हैं।" प्रसिद्ध उक्ति

थोड़ा पाने के लिये ... सब कुछ गँवाना पड़ रहा है।

तुम हमें गोबर दो !
हम तुम्हें गौमांस देगे !!

हाल ही में भारत सरकार ने ५२ करोड़ रु. की विदेशी मुद्रा खर्च करके हालेण्ड से **१ करोड़ टन गोबर आयात करने** का निर्णय लिया है।

और विदेशी मुद्रा की प्राप्ति के बहाने लाखों पशु काटकर विदेशों में मांस भेजा जा रहा है,

"ईस्ट इंडिया कंपनी" के नाम से
व्यापार करने के लिये आये थे।

और अर्थतंत्र के माध्यम से
धीरे धीरे हमें गुलाम बनाकर....

विभिन्न प्रकार से देश की अथाह संपदा लूट कर वर्षों तक लेजाते रहे।

संतों के प्रयत्न से मानसिक बेड़ियाँ जलने लगी और राष्ट्रीय नेताओं के प्रयत्नों के फल स्वरुप चौराहे-चौराहे पर विदेशी वस्तुओं की होलियाँ जल उठी।

अपना माल भारतीय बाजार पर थोपने के लिये उन्होने क्रूरतापूर्वक भारतीय कुटीर उद्योगों पर दमनचक्र चला दिया !
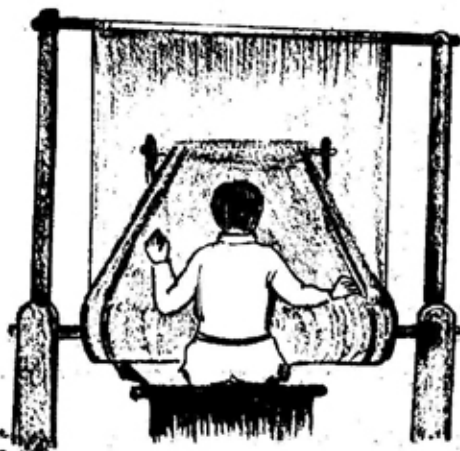
- २५०० काउण्ट की रेकार्ड बारीक सूत से मलमल बनाने वाले ढाका के बुनकरों के **अंगूठे कटवा दिये** !

- नील की खेती के नाम पर खाद्यान्न आदि की कमी करवा दी और बाद में कृषकों को बेरोजगार बनाकर भूखो मरने के लिये छोड़ दिया !

इसी प्रकार विभिन्न कुशल श्रमिकों पर क्रूर कुठाराघात किया

और इसी स्वदेशी आंदोलन को तेज गति दी...
महात्मा गाँधी के स्वदेशी आन्दोलन ने।
" विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार"
ने अंग्रेजों के अर्थतंत्र को जड़मूल से हिलाकर रख दिया
और इसी के चलते उनके पाँव भी उखड़ गये।

देश की राजनैतिक बेड़ियाँ टूट गईं !
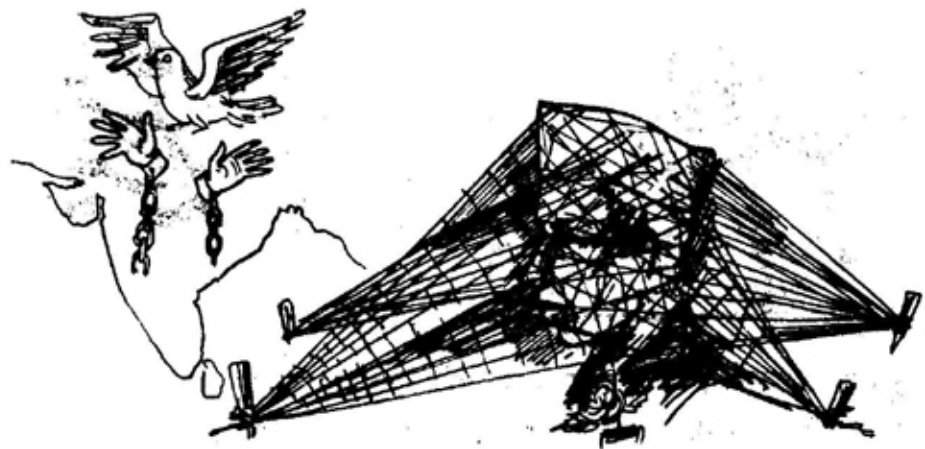
किन्तु यह हमारे देश का दुर्भाग्य ही था कि... तत्कालीन शासन कर्ताओं की मानसिकता विदे-शियत की जकड़नों में कैद थी !

इसी विनाशकारी नीति के तहत....

देश पर दो लाख अस्सी हजार करोड़ रु० से अधिक विदेशी ऋण.

नया कर्ज लेकर पुराना कर्ज पटाना... यह नहीं तो और क्या है?

कुछ नहीं...
उन्होने अखबार की खबर
पढ़ ली है...
इसलिये....
ऐं?
मंगलग्रह
पर
जीवन
संभावना

ईस्ट इण्डिया कं. वापस गई। किन्तु उसके
साथ की हिन्दुस्थान लीवर, बाटा जैसी विदेशी
कम्पनियों को भगाने के स्थान पर अनेक
बहुराष्ट्रीय कम्पनियों को बुला लिया गया।
" देश के प्राकृतिक संसाधनों व
सस्ते श्रम से प्राप्त लाभ विदेशों को.. एवं
प्रदूषण भारत में "
यही है बहुराष्ट्रीय कंपनियों
का असली चेहरा।

बहुराष्ट्रीय कम्पनियां

आधुनिक तंत्रज्ञान - कमीशन के लोभ में विदेशों का यांत्रिक कूड़ा ले-लेकर देश पर कर्जा बढ़ाया जा रहा है। गुणवत्ता क्यों नहीं.... ?

आधुनिक तंत्रज्ञान - कमीशन के लोभ में विदेशों का यांत्रिक कूड़ा ले-लेकर देश पर कर्जा बढ़ाया जा रहा है। गुणवत्ता क्यों नहीं... ?
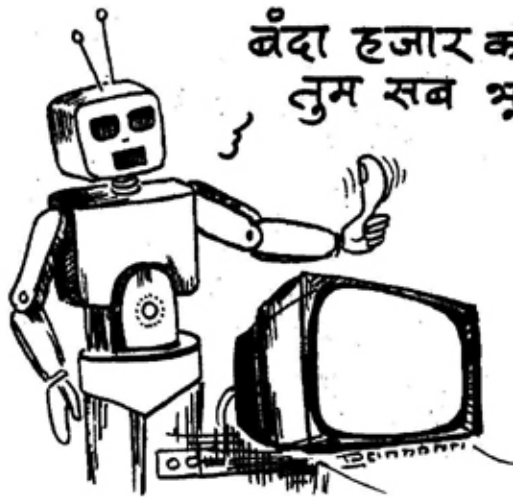
जनसंख्या की अधिकता के कारण देश में हमें रोजगार परक लघु एवं कुटीर उद्योगें को प्राथमिकता देना चाहिये परन्तु आधुनिक तंत्र ज्ञान और विदेशी नकल के कारण नये बेरोजगारों को रोजगार मिलना तो दूर पुराने कामगार भी अपनी रोजी रोटी गँवा रहे हैं।

जीवन रक्षक दवायें 50% से भी कम एवं अनावश्यक मँहगे टॉनिक आदि का 300% तक उत्पादन नियमों के विरुद्ध ....

• भारी पूंजी.. अत्याधुनिक तकनीक... विशाल कारोबार वाले विदेशी उद्योगों वाले विदेशी उद्योगों के सामने हमारे लघु उद्योग कहाँ टिक पायेंगे।

* टाटा, गोदरेज, पारले जैसे बड़े बड़े उद्योग इसीलिये समर्पण कर चुके हैं।

....अनियंत्रित....

लाभ

२ रु. किलो के आलू खरीद कर

१०० रु. किलो के भाव से चिप्स...!

अनेक उपभोक्ता वस्तुओं में बहुराष्ट्रीय कंपनियों की यही नीति है। मुनाफे का यह अपार धन ये कम्पनियाँ विभिन्न नामों व तरीकों से अपने देश में ले जाती हैं।

विकसित देश अपने यहाँ यह कम्पनी नहीं लगा सकते ।...प्रतिबंध है ।।

अरे... यह बीज तो खा जाओ
बोने के लिये हम तुम्हें ब्रिटेन
से अच्छा बीज मंगाकर दे देंगे।

1762

"लाखों लोगों की दर्दनाक मौत अकाल से"

बंगाल में आये इस आकाल का कारण था विदेशी कं. ईस्ट इंडिया की साजिश! इसी कृति का नजारा रहा.... भोपाल गैसकांड!

देश की भूमि को बंजर बनाने का

कर्नाटक में
इटली की एक कम्पनी ने लोगों को
शीघ्र लखपति बनाने का लोभ देकर
परम्परागत फसलों के स्थान पर "यू के लिप्टिस" के पेड़ लगवाये।

फलत: १ करोड हेक्टेयर भूमि का जल स्तर नीचे चला गया ३ वर्षों में ही!

सेवा ?
सिगरेट-शराब जैसी
हानिकारक वस्तुऐं बनाकर
प्रतिवर्ष अरबों रुपये विदेशों
को भेज रही हैं बहुराष्ट्रीय
कंपनियाँ ! यह कैसी सेवा ?

जासूसी

बहुराष्ट्रीय कंपनियों की आड़ में अपने जासूस विकासशील देशों में भेजते हैं.. विकसित देश!

हाल ही में अमरीका के ५ बड़े सैन्य अधिकारी कुछ कम्पनियों की आड़ में भारत में आये!

राजनैतिक हत्यायें!

अपने मनमाने लाभ-शोषणवादी नीति और षड़यंत्रों पर प्रतिबंध लगानेवाले नेताओं की हत्या करने से भी नहीं चूकती हैं.. बहुराष्ट्रीय कम्पनियां।

1976 में चिली के राष्ट्रपति एलेन्दी सेल्वाडोर की हत्या पेप्सी द्वारा...

आतंकवाद

बम्बई शेयर बाजार बमकांड एवं देश के विभिन्न भागों में हुए विस्फोटों की जाँच में विदेशी बैंको का हाथ पाया गया।

शेयर घोटाले के माध्यम से देश की अर्थव्यवस्था को पंगु बनाने में भी विदेशी बैंको की साजिश...

ईसाई मिशनरीज को धन !

बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ अपनी आय का एक बड़ा भाग ईसाई ... मिशनरीज को देती हैं। ... जिसका उपयोग सेवा के बहाने ...

धर्मान्तरण हेतु किया जाता है !

ईर्ष्या द्वेष वैमनस्य.

उपभोक्तावाद को बढ़ावा.

सबसीडी खत्म.

महंगा विदेशी बीज व खाद.

विदेशी ऋण

छटनी

शोषण

प्रदूषण

बहुराष्ट्रीय कम्पनियों ने सिर्फ अर्थतंत्र ही नहीं अपितु हमारे देश के अनेक विभिन्न क्षेत्रों को भी अपनी विनाशकारी जकड़ में ले लिया है।

पहले वस्तु का निर्माण... और फिर प्रचार द्वारा उसका औचित्य सिद्ध करके उसका उपभोग करने की मानसिकता तैयार करना। इसी से जन्म रही हैं कुंठाये... भ्रष्टाचार.. अनैतिकता •

विदेशी कंपनियों के साथ ही आई
पाश्चात्य जीवन शैली
और स्वच्छंद जीवन शैली ने दिये

"एड्स"

जैसे रोगों की श्रृंखला !.

भारत सरकार मजबूर है विश्व बैंक की शर्तों से। 251 करोड़ खर्च...
वैश्यावृति पर प्रतिबंध के बजाय उन्हें सेक्स वर्कर मानकर कंडोम बॉटे जा रहे हैं।
एड्स विरोधी प्रचार के नाम पर अश्लील प्रचार किया जा रहा है।

आदमी चांद पर पहुँच गया है। पर... विदेशी उपभोक्तावादी प्रचार शैली के कारण पड़ोसी का घर चांद से भी अधिक दूर हो गया है। मानसिक कुंठायें पनप रही हैं... भ्रष्टाचार.. विद्वेष

उखाड़ फैंके गैट रूपी
नव रावण को ।

उपनिवेशवादी रावण से
अपनी भूमि (सीत को भूमि कहा जाता है।)
लव (खनिज) और कुश (वनस्पति)
की जननी सीता
(वेदों में हल की लाइन को
सीता कहा जाता है।)
को मुक्त कराने वाले

श्रीराम

से प्रेरणा लेकर आइये!
हम भी जुट जायें ।

·स्वदेशी·स्वदेशी·स्वदेशी·

अहा ऽऽ
विकास
की
गति
तेज हो गई।

आइये !
मुक्त होकर उड़ें भी !!
स्वदेश से जुड़ें भी !!!
राष्ट्र को वैभवशाली
बनाने के लिये
"स्वदेशी"
व्रत धारण करें।